

लक्ष्मीन भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं गुरुकुल परंपरा: कथासरित्सागर के विशेष परिप्रेक्ष्य में।

MkW j kTkho dpek
fo" k; % bfrngl
y0u0fe0fo0fo0] njHkxk] fcgkj

cgRdFkk dk l Ldr : iKUrj.k djsds कभीरी कथाकार सोमदेव ने बौद्धिक जगत कर बहुत बड़ा mi dkj fd; k gA dFkkl fjRI kxj ds uke l s fo[; kr gpl; g dFkk vi us emy l kr l s tgl; cgr vFkkd ea fHkUu gs ogha bl l s l kenò dh vFkkuo vkj l gt 'kSyh dk Hkh gea cksk gkrk gA tS k fd Kkr gkrk gs fd bl dFkk dk संस्कृत रूपान्तरण कभीर के राजा अनन्त (1068-1081 ई. l uL dh egjkulh l w òrh ds eukfoukn ds fufeUk gh fd; k x; k Fkka dFkkl fjRI kxj ea fuc) dFkk; a l kekf'td l kldfrd , oa /kkfed thou ea cgr;k; keh ifjorU dk l Ldr djrh gA Hkjr; thou dk , d k dkbz {k= ugha cpk Fkk tgl; fd l h u fd l h : i ea ifjorU yf{kr ugha gks jgk Fkka

सोमदेव ने गुरुकुलों के माध्यम से संचालित होने वाली जिस शिक्षा के स्वरूप का विचार किया है उसके ऊपर देश काल का प्रभाव स्पष्टतः देखा जा रहा था। यह तथ्य भी सामने आता है कि देश के कई भूखण्डों का विकास; u djus dh i dfr dk Hkh gkl gks jgk Fkka l Fkfr; k; bruh rsth l s cnyha fd i zdk. M i kf. MR; l s ; Dr cka. kka ds futh vkokl ij gh jgdj Nk= vuud 'kkL=ka dk v/; ; u djus ea vi us eu dks jekus yxs Fkka bl Hkjh myVOj ds cktin i kम्परिक शिक्षा के सूत्र पूरी तरह छिन्न नहीं हुए थे। तत्कालीन भारत की हृदयस्थली में शिक्षा के नये केन्द्र खोले जा रहे थे। गंगा के किनारे के किसी शान्त और सुरम्य स्थान में एक कुटिया cukdj cka. k Nk=ka dks i <k jgk Fkka ; gk; ij kus xq dgyka dh >yd fn[kk; h ns tkrh Fkka¹ काषी में कभी देश के fo[; kr xq dgyka dh LFkki uk dh x; h Fkh ij e/; dky rd vkr&vkr bl dh igys tS h 'kku ugha jghA ; gk; Kku i zkg dbz dkj. kka l s vo:) gks x; k Fkka bl dh fcfNUu ijEijk l s vkgr cka. k i e dks fd l h vU; xq dgy ea tkuk i Mk² यद्यपि देश ds dbz Hkxka ea igkru ijEijk dk vuq j.k करते हुए तरह-तरह के शिक्षण संस्थान स्थापित तो किये गये थे फिर भी यहाँ कई तरह की विसंगतियाँ एक साथ देखी जा रही थीं। गुरु-षिष्य के vki l h l Ldr Hkh vc igys tS s ugha jg x; s Fkka ; g i pyu tks vc Hkh fn[kk; h ns jgk Fkk fd Nk= vi uh&vi uh : fp ds vuq kj gh ofnd 'kk[kvka dkv/; ; u dj jgs Fkka , d s Nk= ftudh , d rjg dh mez vkj v/; ; u dk , d gh rjg dk fo" k; jgrk Fkka muds chip l nk l [kkHko cuk jgrk Fkka , d h gh i d fUk dHkh i k j fHkd xq dgyka ea fn[kk; h nh Fkha tc शिक्षा ग्रहण के लिए आये छात्रों के बीच आपस में प्रेमभाव बना रहता था। ये सब के सब एक nh js ds l q k&nq[k dk l kFkh cudj jgrs Fkka ; g l [kkHko gh muds chip tkr&i kar ds Hkn dks feVk nrk Fkka , d l e) {kf=; ifjokj dk Nk= Hkh vi us l gikBh cka. k i e dk vPNk fe= cu tkrk Fkka³ xq dgyka l s ; gh vi fkk Fkh fd ; gk; jgdj v/; ; u djus okys Nk= vkxs tkdj vR; l r gh ea/kkoh vkj vi us fo" k; ds i zdk. M fo}ku fl) gkxka buds Kku l s vkjka dk Hkh Hkyk gksxka xq dgyka ea nkf[kys ds fy, gkM+epi jgrh Fkha l Hkh यही चाहते कि उनका पुत्र इसी के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके एक विद्वान और सम्य नागरिक के रूप में vi uh i gpkuk; A ; g ekuh gpl ckr gs fd ifrHk nk; kf/kdkj dh rjg ugha gkrhA , d k l kpk tkuk Hkh mfpr ugha fd xq dgyka ea v/; ; ujr Nk= , d tS h ifrHk l s l EilUu gkxka dFkkl fjRI kxj l s irk pyrks fd d f. Muij dk jgus okyk , d cka. k ckyd vi us firrk ds ngkUr ds ckn i kVfyi e ds ifl) vkpk; l t; nUk ds ikl

शास्त्राध्ययन के निमित्त पहुँचा हुआ था। इस आचार्य के निर्देशों का अर्थ है कि वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे। अतः वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे। अतः वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे। अतः वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे।

इस प्रकार वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे। अतः वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे। अतः वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे। अतः वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे।

इस प्रकार वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे। अतः वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे। अतः वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे। अतः वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे।

लेकोपयोगी शिक्षा के विकास के लिए शासन ने भी अपनी दिलचस्पी दिखायी। एतदर्थ उपाध्यों और आचार्यों को उनकी सुनिश्चित जीविका के लिए अग्रहार देने का प्रचलन तब ही शुरू हुआ। अतः वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे। अतः वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे।

इस प्रकार वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे। अतः वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे। अतः वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे। अतः वे अपने विद्यार्थियों को न केवल किताबों से सीखाने के लिए बल्कि वे उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए शिक्षित करने के लिए प्रेरित करे।

संवाद में विद्या के माध्यम से धन कमाने का कौशल भी छुपा हुआ है। विद्याध्ययन के बाद उस नगज dks viuk dlnz बनाने की कोषिष हो जहाँ के लोग विद्यानुरागी होने के साथ-साथ धन कमाने में भी सहायक सिद्ध हो सकें। आखिर ea y&ndj /ku ugha thou dk voyEc curk gA

i kVfyi ¼ dk i Mld h uxj jktxg dbz 'krkfcn; ka l s v/; kRe fo |k dk dlnz cuk gqvk FkA पूरे देश में ; gha , dek= , d k LFkku Fkk t gk; ck) kpk; ka vkj i fjcktdka ds /kkfezd fl) kUr dk mn?kkk l kF&l kFk l puk; h nsk था। भारतीय समाज और यहाँ की चिन्तन धारा को आन्दोलित करने वाले बौद्ध दर्शन के विख्यात आचार्य राजगृह की ifo= /kjk ij gh vorfjr gq FkA ; gk; dk vk/; kRed ekgy 'kq l s gh fu"dykk vkj 'kkUr jgkA bl ds i Mld ds xkoka ea ofnd /kel , oa l dfr ds mluk; d ckä.k jgk djrs FkA c) ds dky ea Hkh ; gk; , d & , d s ckä.k आचार्य हुए जिनके आचार-दर्शन को लेकर संघ के भीतर टीका-टिप्पणी dk yEck nkj pyk djrk FkA ckn dh 'krkfcn; ka vFkk~- ck) /kel ds i rudky ea ; gk; fQj l s ofnd /kel dk gh ckycky dk; e gks x; k FkA dFkl fjRI kxj ftl dky [k.M dk ifrfuf/kRo djrk g} ml l s jktxg dh egÜkk fo |k ds , d ifl) dlnz ds : lk ea cus jgus dh ckr प्रमाणित होती है। यहाँ दूर-दूर के प्रदेशों के रहने वाले छात्र विद्याध्ययन के लिए आया करते थे। तमाम साक्ष्यों के आधार पर हमारी यह धारणा बनती है कि पाटलिपुत्र और राजगृह-ये दोनों ही नगर शिक्षा txr ea viuk , d [kl eplke gkfl y dj pps FkA de l s de e/; dky ea rks budh bl h gfl ; r dk irk pyrk gA ckä.k i ¼ i kVfyi ¼ dh ; k=kk v/; ; u ds fufeÜk gh djrs FkA dHkh Hkh ns[kus dks feyk fd ftl आचार्य से उसने शिक्षा पायी उसी की पुत्री से उसका विवाह भी हो tkrh] yfdu , d k 0; ogkj ml dh iz[kj ifrHk dks ns[kdj gh gqvk FkA¹⁷

बलभी भी शिक्षा के एक प्रमुख केन्द्र के रूप में विकासोन्मुख था। कथासरित्सागर से पता चलता है कि fo".kpiÜk uke dk , d ckä.k bl dh egÜkk l s voxr gkus ds ckn ; gh v/; ; u ds fy, vk; k gqvk FkA¹⁸ geul kx के विवरण से ऐसा नहीं लगता भारत यात्रा के समय तक बलभी शिक्षा के एक प्रमुख केन्द्र के रूप में विकसित था। इत्सिंग ने यह अवष्य कहा है कि नालन्दा के साथ-साथ बलभी को भी एक विख्यात शिक्षा केन्द्र का दर्जा हासिल हो pldk FkA¹⁹ fi NYkh l fn; ka ds vfhky[ky साक्ष्यों पर गौर करें तो मैत्रक वंशीय राजाओं ने बौद्ध विहारों को जब-जब भूमिदान देने का शासकीय आदेश जारी किया था तो उसका उद्देश्य शिक्षा का बहुमुखी विकास करना भी होता था। fd l h ifl) ck) kpk; L dh mi fLFkr ea gh bl Hkfe vupku dh ifO; k ijh gati थी। ऐसा लगता है कि शुरू-शुरू में बलभी का विकास एक ऐसे शिक्षा के केन्द्र के रूप में हुआ जहाँ वेदाध्ययन के अतिरिक्त अन्य धर्मो विशेषतया बौद्धों l s l Ec) l LFkkvka dks Hkh vi us vi us <x l s fodkl kled[k gkrs jgus dk vol j inku fd; k tk jgk gA

कषीर तो सोमदेव का अपना ही गृह प्रदेश था। मध्यकाल के शुरू में ही इसका विकास एक ऐसे शिक्षा के केन्द्र के रूप में हुआ जिसकी ख्याति देश के कोने-कोने में पसर गयी थी। सर्वाधिक चर्चित प्रसंग तो यह है कि यह तत्कालीन भारत का यह एक ऐसा प्रदेश था जहाँ सर्वधर्म समभाव की नीति को सामने रखकर शिक्षण संस्थानों की LFkki uk dh tk jgh FkA bl l puk dk Hkh dkbz de , frgkfl d egRo ugha fd i kVfyi ¼ fuokl h , d fo}ku- काषीरी विद्वानों के साथ शास्त्रीय चर्चा के लिए ही गया हुआ था।²⁰ कषीरी कवियों की प्रतिभा का तो कुछ कहना ही ugha FkA²¹

v/; ; u ds iz/kku fo"k;

कथासरित्सागर के अनुसार धर्मशास्त्रों द्वारा अनुमोदित विषय ही गुरु-शिष्य के बीच सेतु का काम करता था। fo"k; ofo/; dh n"V l s ml l e; dk 'k{k d txr Hkji jk fn [krk gA ru=] el=] vkj tknw Vkus dk i Hkko c<+ tkus l s dbz ykx , s s xq vka vkj rki=dka dh [kkt ea yxs Fk ftUgkus l ka kfjd pgy&i gy l s nj gkdj xQkvka vkj dUnjkvka dh 'kj.k ys j [kh FkA bul cl s vyx l xkhr fo | k Fk ft l ds l Eekgu l s dkbz Hkh 0; fDr cPkk gq/k ugha FkA onka l s ydj 0; ogkji ; kxh 'kL=ka ds v/; ; u dh ijEi jk Hkh vi us mRd"Kz ij i gph gPz FkA cKā.k vi uh thfodk ds fy, , s s gh fo"k; ka dk p; u dj jgs FkA l ekt ds dbz ykx fo"k fo | k vkj l atfouh fo | k ds pDdj ea Hkh ?kpek djrs FkA bl ekU; rk ea dkbz QdZ ugha i Mk Fk fd dī k= , oa vfoordh 0; fDr dks xk+ मन्त्रों की शिक्षा प्रदान नहीं की जानी चाहिये। जिन लोगों में रहस्य को छुपाकर रखे जाने की क्षमता नहीं है उन्हें कोई भी आचार्य मन्त्र की शिक्षा नहीं देगा। जिन लोगों में रहस्य को छुपाकर रखे जाने की क्षमता नहीं है उन्हें कोई भी आचार्य मन्त्र की शिक्षा नहीं देगा। (Bhisham 1991: 100)।

मध्यकाल के आरम्भ से ही इस देश के ऊपर सामन्ती व्यवस्था हावी होने लगी थी। वास्तव में संगीत विद्या d ifr : >ku ds c<fs jgus dk ; gh mi ; P r l e; FkA bl hfy, njckjka ea l xhrkpk; Z j [ks tkus yxs FkA blgha से राजकुमारियाँ नृत्य की शिक्षा लिया करती थीं। (Bhisham 1991: 100)। श्रेष्ठ विद्या का प्रदर्शन करने में कोई संकोच नहीं दिखाती थी।²² rcys dh Fkki ij fHkUu&fHkUu epkvka ds l kFk ukp jgh gā koyh dks n[kdj dkbz Hkh 0; fDr ekfgr gks tkrk FkA²³ मध्यकाल में स्त्री शिक्षा पर भी ज्यादा जोर देने dicker i ekf.kr gsrh gA vkfHk tkr; , oa l Ei Uu ?kjuka dh dī) erh dēkfj; ka dks 'kL=kFz ea fui qk cuk; k tkrk FkA dFkdkj us mi ekvka ds ek/; e l s ; g 0; Dr fd; k gS fd 'kL=kFz ds fy, vk; h gPz jkt dēkfj h tc vki u ij fojkteku gsrh FkH rks og LoPN vdkv ea blngys[kk dh rjg i rhr gsrh FkA ml us tc i dZ i {k dh LFkki uk dh rks l cdh ogh yxk fd ml dh pedhyh nar i fDr; ka l s fudy jgh fdj .kka ds /kxs ea eukgj 'kCn jRuka dh ekyk xFk nh x; h gA²⁴

धर्मशास्त्र ea vBkjg rjg ds 0; ogkj i nka dh foopuk dh x; h FkA bl ea pfj= l fkkj ds fy, dbz rjg के उपयोगी दिये गये थे। पिता पुत्र को सदाचारी बने रहने के लिए धर्मशास्त्र का परायण करने के लिए प्रेरित करता FkA²⁵ , frgkfl d n"V l s bl oDr0; eW; pks ts k Hkh jgkqk ij og ckr rks gea vUreU l s LoHdkj djuh gh पड़ेगी कि धर्मशास्त्र सामाजिक आचार-विचार के स्खलन को रोकने में बहुत हद तक उपयोगी सिद्ध हुए थे। इसके v/; ; u l s euq; l nkpjh curk Fk vkj dēkxZ dh vkj i dUk gkus l s og cPk jgrk FkA fofo/k dFk i d xka l s l fpr ; gh होता है कि वैदिक शिक्षा के ऊपर एक तरह से ब्राह्मणों का ही एकाधिकार था। यह कहीं से प्रमाणित नहीं gkrk fd {kf=; ka dks onk/; ; u l s ofpr fd; k x; k FkA e/; dky dk l kēftd rkuk&ckuk gh dīn , s k Fk fd onk/; ; u ds fy, vi fjgk; Z ekus x; s cKā.kka ds mUkj k/kdkjh bl s ydj vi uk n"Vdks k cnyus yxs FkA ; g u; s u; s l ket; ka ds cuus fcXMus dk nkj FkA yxkrkj ; q) ka ds fNM&jgus l s onk/; ; u vc thfodk dk igys ts k l kr ugha cu l drk FkA ; g , d , s h fLFkr Fk ft l dk l keuk dj jgs cKā.kka dks vi us fy, nil jk fodYi चुनना पड़ा। कथासरित्सागर में श्रीदर्शन नाम के एक ऐसे बलि" B cKā.k dēkj dk pfjr fu: fir gS ft l us on vkj शास्त्र विद्या में एक जैसा कौशल हासिल किया था। शस्त्र चालन में उसकी प्रतिभा इतनी बेजोड़ रही कि वह राजकीय l uk dk egRoi wZ vf/kdkjh rd cu x; k FkA²⁶

कथासरित्सागर का यह प्रसंग भी रोचक कहा जायेगा कि देवी कष्पा से सीखी गयी विद्या का अपना एक व्यक्तित्व गुरु गुरुक कथा कहते हैं उस व्यक्ति, जो अत्यन्त ही शक्तिशाली है; जो जो भी करे उसे कर लेता है। कथासरित्सागर²⁷ बुद्ध के जन्म के समय में देवी कष्पा ने अपने शक्तिशाली बालक को देखा और उससे विद्या सीखी। कथासरित्सागर में देवी कष्पा का वर्णन है कि वह एक शक्तिशाली और अत्यन्त ही शक्तिशाली थी, जो जो भी करे उसे कर लेता है। कथासरित्सागर में देवी कष्पा का वर्णन है कि वह एक शक्तिशाली और अत्यन्त ही शक्तिशाली थी, जो जो भी करे उसे कर लेता है।

कथासरित्सागर में देवी कष्पा का वर्णन है कि वह एक शक्तिशाली और अत्यन्त ही शक्तिशाली थी, जो जो भी करे उसे कर लेता है। कथासरित्सागर में देवी कष्पा का वर्णन है कि वह एक शक्तिशाली और अत्यन्त ही शक्तिशाली थी, जो जो भी करे उसे कर लेता है। कथासरित्सागर में देवी कष्पा का वर्णन है कि वह एक शक्तिशाली और अत्यन्त ही शक्तिशाली थी, जो जो भी करे उसे कर लेता है।

कथासरित्सागर में देवी कष्पा का वर्णन है कि वह एक शक्तिशाली और अत्यन्त ही शक्तिशाली थी, जो जो भी करे उसे कर लेता है। कथासरित्सागर में देवी कष्पा का वर्णन है कि वह एक शक्तिशाली और अत्यन्त ही शक्तिशाली थी, जो जो भी करे उसे कर लेता है। कथासरित्सागर में देवी कष्पा का वर्णन है कि वह एक शक्तिशाली और अत्यन्त ही शक्तिशाली थी, जो जो भी करे उसे कर लेता है।

शिष्यों की पात्रता –अपात्रता का विचार

नीति ग्रन्थों में उन शिष्यों के नाम निर्दिष्ट हैं जिन्हें अपने गुरु से विद्यार्जन का कोई अधिकार नहीं होता। भारत में जिस तरह की गुरु-शिष्य संबंधिताएँ विकसित हुईं, वे ही गुरु-शिष्य संबंधिताएँ हैं। कथासरित्सागर में शिष्य की पात्रता और उसमें प्रकृति प्रदत्त योग्यता का आकलन किया जाता रहा है। प्रसंगवश कथासरित्सागर में शिष्य की जैसी पात्रता का विचार उठाया है उसके ऊपर धर्म शास्त्र का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। भारत जैसे देश की यही परम्परा रही है कि यहाँ शिष्य को गुरु से कुछ पाने के लिए उसे विवेकशील और आत्मसंयमी बनना होता है। इसीलिए शास्त्रों में कई तरह के आचार संबंधी निर्देश दिये गये हैं। जिन शिष्याओं को शिक्षा देनी थी, उनसे पहले उनके चरित्र का आकलन किया जाता था। कथाओं में इनकी हठवादिता का वर्णन है कि वह एक शक्तिशाली और अत्यन्त ही शक्तिशाली थी, जो जो भी करे उसे कर लेता है।

विद्यारम्भ से पूर्व शिष्यों की पात्रता का आकलन किया जाता था। कथासरित्सागर में शिष्य की पात्रता का विचार उठाया है उसके ऊपर धर्म शास्त्र का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। भारत जैसे देश की यही परम्परा रही है कि यहाँ शिष्य को गुरु से कुछ पाने के लिए उसे विवेकशील और आत्मसंयमी बनना होता है। इसीलिए शास्त्रों में कई तरह के आचार संबंधी निर्देश दिये गये हैं। जिन शिष्याओं को शिक्षा देनी थी, उनसे पहले उनके चरित्र का आकलन किया जाता था। कथाओं में इनकी हठवादिता का वर्णन है कि वह एक शक्तिशाली और अत्यन्त ही शक्तिशाली थी, जो जो भी करे उसे कर लेता है।

Åp&uip dks Bid l s l e> yrk gÅ og ; g tku yrk g\$fd ml ds pkjka vksj t gk; t\$ k ?kfvR gks jgk g\$ ml s ek; k ds iip ds vrtirikt कुछ और नहीं कहा जा सकता। जिसने माया को जीत लिया वह अग्नि प्रवेश कर सकता g\$ vksj fQj ty l sfudy dj ije Kku dks ik yrk gÅ fd l h dks fo | k nus dk eryc g\$ k fd ml s fl f) fey x; h vksj fQj , d k ugha g\$ k rks ; gh l e>k tkuk pkfg, fd xq dh fo | k gh u"V gks x; hA³² fl f) dk eryc g\$ fd vi us l keus eukokifNr ifj .kke dh dkeuk ij h gks x; h vksj , d h ea flFkr eu dh l aq"V Hkh t: jh gÅ ; fn i æknh cu x; s eu dks fu; f=r ugha fd; k x; k rks feyh gpZ fl f) ; k; Hkh , d u , d fnu ij h rjg u"V gks tkrh gÅ L; kr-blgha l c dkjणों से विद्या सिखाने के पहले गुरु शिष्य dh ik=rk dk fopkj dj yk FkA xq l s सिद्धि प्राप्त करने वाले शिष्य को दुविधा से मुक्त होना चाहिए। कदाचित् ऐसा नहीं हुआ तो गुरु का ज्ञान भी दाव पर लग जाता है। इसीलिए पात्रता का विचार करने के बाद ही शिष्य को विद्या दान क fy, xq dks vkxs c<uk pkfg; A³³ कथासरित्सागर में शिक्षा को भाग्यवाद से जुड़ी हुई चीज कहा गया है। इसका भी मंथन हुआ है कि विधाता ds oke gks tkus ij ijs iz kl ds l kFk l h[kh x; h fo | k Hkh dke ugha vkrhA y&ndj ; g n[k dk gh dkj .k cu tkrh gÅ bl RkF; dk vto\$.k Hkh t: jh g\$ fd iks "k dk o{k rHkh Qy nrk g\$ tc ml ds HkKX; dh tM+fodkj jfgr gk; uhfr ds Qy l s ; Qr gks vksj Kku ds ty l s ml s fl fpr fd; k x; k gkA³⁴

International Journal of Research in Social Sciences

- 1- d0 l 0 l k0 12-7-14A
- 2- ogha 12-7] 116&117A
- 3- अहंच विद्यागमं कुर्वाणो गुरु वेष्मनि ।
r=ora l o; l ka e/; s l ctāpkfj .kkeAA
एकष्व तेषु ea fe=; HkR{k.kk dēkj d%A
गुणी विजयसेनाख्यो महाद्यक्षत्रिष्मत्सजः ।।
- 4- fi rfj Loxxrs l ks ga xRok i kVfyi q=deA
t; nUkej k/; k; a fo | k grks : i kl neAA
षिष्यमाणोपि जाड्येन न यदाचारमप्यहम् ।।
vfona ru eka t=PNk=k% l oR; q kg l uAA ogh 14-4-&20&22A
- 5- ogh 8-6] 153&54A
- 6- okpLi fr f}onh] dFkl fjRI kxj , d l kl dfrd v/; ; u] i 0 176
- 7- ohj %y{k.k i D% 'knj f/kf" Bra [k/a xte% 'kns f} t k l ke% ok foi j oxgkj % L; kra d q ta l heklr okl r%AA
- 8- jkt 6-89] 01-80] 90] 98] 100] 121 vkfn
- 9- , तकेषन इन एषेंट इंडिया, पृ0 294A
- 10- dR; dYir: ek0&02 i 0 71A
- 11- plntorh rkei =] l a 1150 vkj 1156A
- 12- okpLi fr f}onh] i n l fufn'V] i 0 177A
- 13- देशोपदेश-पाठ-06A
- 14- tsvkz p cky; e XIV & cky; e II, i 0 7&17A
- 15- dnkfp | kfr dkys p drs Lok/; k; def. ka
bfr o"kl mi k/; k; % e"Vkl ekfHk% d rkfMkd%AA
bnepa fo/ka dl ekluxja {kerka xreA
l jLoRyaष्व लक्ष्म्याष्व तदुपाध्याय कथ्यताम् ।।
d0 l 0 l k0 01-3-2-3A
- 16- --LFkua jkt xga uke tXefozkk tLpN; k&ogha 1-3] 7&8
- 17- थ्यतरि स्वर्गते सो च भ्रातरौ तीर्ण शेषवो ।
fo | ki kR; s iz ; r% i ja i kVfyi q=deAA
roBksi kUk fo | kH; keq k/; k; s futs l qA
देवर्षमा ददौ ताभ्यां मूर्ते दिवं इवापरे ।। वही 2-2- 8&9A
- 18- Okgh 6-6 43A
- 19- एजुकेशन इन एषेंट इंडिया, पृ0 272-73A
- 20- d0 l 0 l k0 10-10] 5&6A
- 21- dK0; ehed k] i 0 83A

- 22- d0 l 0 l k0 12-5 73&74A
- 23- तत्रहतमहासोधि तामपष्यं सुमध्यमाम् ।
gd koyh jktDU; ka u R; Urha fi rj xr%AA ogh 12-5] 76A
- 24- पूर्व पक्षं सा स्फुरद् दन्ताषु तन्तृषु ।
xQ; Urho l y{k.kcnjRu e; h l teAA ogh 12-5] 78&79A
- 25- तद्भीत्याधिपतः पित्र धर्मशास्त्रं प्रयत्नतः ॥ वही 12-5] 192A
- 26- सोऽपि श्रीदर्शनस्तत्र व) a i klr% fi r%gA
id"l onfo/kkl q i ki kL=%kp oh; bkuAA ogh 12-6] 69A
- 27- ogha 12-6] 132&133A
- 28- -- r=kd"kega foi a fufok fo"kfo | ; ka ogha 12-8] 14A
- 29- lkk.kkLro; k ee i r k r Ri dhj xgk.k eA
Oks-ky l k/ku eL=feea i klrse; k fi r%AA
त्वादृषामप्रयक्तायं सिद्धिकृत्सवषालिनाम् ।
मादृषाः पुनरेतेन क्लीवाः किं नाम कुर्वते ॥ वही 12-8] 16&17A
- 30- Ogha 12-9] 21&23A
- 31- ---सिद्धमायादभुतपथं सषरीरमिबाम्बरम् ॥ वही 12-22&23A
- 32- Ogha 12-25] 54&57A
- 33- तस्मात्र मन्दस्य तु विप्रयून चित्तं प्रबुध्यापि विकल्पे स्म । विधान सा तेन गतास्य fl f) %LFkkunkukPp
xj kfoL"Vk ogh 12-25-86A
- 34- bRFka pki kftZks ; Rukn xq kki fo/kj s fo/kkA
l Ei Uk; s u i ja tk; rs r q foi Ur; AA
emysg; fod rs nos fl Dr i Kkuokfj .kkA
u; kyoky; % Qyfr ik; % i kS "k i kni%AA ogh 12-29 43&44
-